दिवान–ए–इमाम

से

चयनित चालीस कविताएँ

(हिन्दी लिपि)

इमाम खुमैनी (र) के आध्यात्मिक काव्य का संक्षिप्त परिचय

इस्लामी क्रान्ति के महान नायक एवं इस्लामी गणतंत्र ईरान के संस्थापक इमाम खुमैनी (र) के कुछेक चयनित काव्य का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है। इमाम खुमैनी का व्यक्तित्व, जीवन के महत्वपूर्ण एवं विचारोत्तेजक पक्षों के विभिन्न एवं कदाचित् भिन्न धर्मशास्त्रीय, आध्यात्मिक एवं राजनीतिक मन्तव्यों के बीच ऐसी सहजता है जो अप्राप्य नहीं तो दुर्लभ अवश्य है।

इमाम खुमैनी की प्रासंगिक, आध्यात्मिक रचनाएं उनकी महानता की द्योतक हैं जिन्हें 'सूरह अलहम्द', 'आदाब अल-सलात', 'मिसबाह अल-हिदाया', इलल खिलाफा व-अल-विलाया', 'अरबईन' (चालीस हदीसें) 'शरह दोआए- सहर' 'तालीका बर फुसूसुल हकम' व 'मिसबाहुल उन्स', 'दीवाने असआर' (काव्य संकलन) तथा 'इरफानी मकतूब' नामक पुस्तकों के आधार पर उनके वास्तविक चिन्तन एवं धार्मिक विश्वासों का विश्लेषण किया जा सकता है।

अन्य धार्मिक चिन्तन-प्रणालियों तथा इमाम खुमैनी (र) के आध्यात्मिक विचारधारा के बीच मौलिक अन्तर यह है कि इमाम खुमैनी का आध्यात्म महाकाव्यात्मक है। इसके द्वारा हमारे भीतर की बुरी शक्तियों अर्थात् हमारे लोभी मन के मुकाबले में मानव को डटे रहने का आदेश देता है। इसके साथ-ही-साथ ईश्वर के मार्ग में आने वाली रुकावटों के विरुद्ध भी संघर्ष करने का आदेश करता है। इमाम खुमैनी (र)

का आध्यात्म मठवाद, आडम्बरपूर्ण वेशभूषा आदि को कोई स्थान नहीं देता वरन् उनका आध्यात्म असाधारण ऊर्जा के साथ समानता, स्वतंत्रता एवं सदाचार की ओर अग्रसर करता है। वैयक्तिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ सामाजिक समरसता एवं स्वतंत्रता को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण समस्याओं के संदर्भ में पेश करता है। इमाम खुमैनी (र) का आध्यात्म वास्तविक रूप में एक गतिशील एवं उन्नतिशील ध ार्मिक सिद्धान्त है जो सभी सदाचारी समाज में फलता-फूलता है। जनसाधारण के दु:ख, कष्ट एवं समस्याओं के संदर्भ में पूरी तरह संवेदनशील है। इमाम खुमैनी (र) के विचार में वास्तविक आध्यात्मिक व्यक्ति वह है जो अपनी मन:स्थिति के प्रति अन्याय नहीं करता तथा किसी अन्य व्यक्ति पर भी अन्याय होते सहन नहीं करता। यदि इसे सिद्धांत रूप में माना जाए तो काव्य के माध्यम से मानव चिन्तन का रुचिकर प्रदर्शन होता है तथा कविता एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति के अनुभूति को साकार रूप प्रदान करता है। इस आधार पर इमाम खुमैनी के आध्यात्मिक काव्य को देखा जाए तो उनके असाधारण व्यक्तित्व का एक अनूठा आयाम सामने आता है। चाहे उनके काव्य का कलात्मक दशष्टि से काव्यशास्त्रीय आधार पर विशलेषण किया जाए अथवा आध्यात्मिक विषयक समस्याओं का, हर प्रकार से उनका महान काव्य ईरानी और इस्लामी महान् काव्यों के समकक्ष दिखता है।

इमाम खुमैनी (र) ने अपनी गद्यात्मक एवं पद्यात्मक रचनाओं में पूर्व के विभूतियों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली का भी प्रयोग किया है। परन्तु यदाकदा उनका अर्थभेद भी किया है तथा उनकी अलग से भी व्याख्या की है और नये प्रकार से भी उनका प्रयोग किया है। इतनी बात प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि विद्वानों और लेखकों के विभिन्न सिद्धान्तों एवं आधारों को ध्यान में रखते हुए फारसी काव्य को पांच युगों में विभाजित करते हैं तथा प्रत्येक युग की विशेषताओं पर ध्यान रखते हुए उन्हें 'सब्के-खुरासानी' 'सब्के-ईरानी', 'सब्के-हिन्दी', 'बाजगशत' तथा 'शेरे-नौ' के नाम से याद किया जाता है। यद्यपि इस विभाजन को गणित के आधार पर नहीं लेना चाहिए क्योंकि विभिन्न युग के काव्य में ऐसी विशेषताएं स्वत: स्पष्ट हो जाती हैं जिससे उस युग के 'सब्के'

अथवा काव्य विशेषता का अनुमान किया जा सकता है। इन आधारों को ध्यान में रखते हुए इमाम खुमैनी (र) के काव्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उन्होंने 'सब्के-ईराकी' का अपने काव्य में अधिक प्रयोग किया है। स्पष्ट है कि फारसी साहित्य के प्रख्यात कवियों में ख्वाजा हाफिज शीराजी इमाम खुमैनी के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र थे तथा उन्होंने अपनी अधिकतर गजलें ख्वाजा शीराजी के गजलों के आधार पर ही कही हैं।

आध्यात्म की समस्याओं पर विचार किया जाए तो इसे मानव चिंतन एवं विवेक का आधार-सूत्र कहा जा सकता है। आध्यात्म द्वारा मानव-प्रेम, समानता, समरसता, स्वतंत्रता का संदेश मिलता है। अपेक्षित है कि इस्लामिक क्रान्ति के महान नायक इमाम खुमैनी (र) के काव्य का प्रस्तुत अनुवाद आध्यात्म, समानता, स्वतंत्रता एवं समरसता को स्थापित करने में अपना योगदान प्रस्तुत करेगा तथा विश्व की दो महान् सांस्कशतिक शक्तियों- भारत तथा ईरान के बीच सांस्कशतिक सम्बन्धों को सुदश्ढ़ करने एवं विकसित करने में सहायक होगी।

सांस्कशतिक विभाग
इस्लामी गणतंत्र ईरान दूतावास,
नयी दिल्ली, भारत
१ जून, २००७

ईदे नौ रोज़

बादे नौ रोज़ से सरमस्त हैं कोहो[1] सहरा[2]
ज़ैब तन ईद की पौशाक करें शाहो गदा

बुलबुले सिदरह नशों भी नहीं पहुंचा उस तक
इसी मुतरिब पे मैं नाज़ां हूँ जो है क़िब्लानुमा

सूफ़िया ओ उरफ़ा ने नहीं देखा वुह दश्त[3]
दस्ते मुतरिब से मिले मय, तो मिले राहे सफ़ा

जाएं सब दश्त में या सूऐ चमन ईद के दिन
मैकदे में ही लगाऊंगा मैं रुख़ सूऐ ख़ुदा

शाहो दरवेश को नौ रोज़ मुबारक हो, मगर
यार दिलदार करे आके दरे मैकदा वा[4]

गर दरे पीरे ख़राबात का रस्ता मिल जाए
सर के बल तय करुं यह राह मैं क़दमों की जगह

न मिला उसका पता, ठोकरें खाईं बरसों
अहले दस्तार की सफ़ में भी न कुछ हाथ आया

---

1. पहाड़ 2. रेगिस्तान 3. जंगल 4. खोलना

हुस्ने इख़्तिताम[1]

उठ और मय से भर दे साक़िया हमारे जाम को
जो दिल से दूर फेंक दे हवाऐ नंगो नाम को

वह मय उंडेले जाम में रूह को फ़ना करे
निकाल दे वुजूद से फ़रेबे मकरो दाम को

ख़ुदी से जो रहा करे, ज़माने दिल को थाम ले
गिरा दे नज़रों से ख़्याले मंसबो[2] मुक़ाम को

वुह मय जो बज़्मे मेय कशां अजनबी के दरमियां
कुचल दे जज़्बए रुकूओ सिजदओ क़याम को

हरीमे कुदसे गुल रुख़ां से रहना दूर ही के मैं
जिधर से आऊं, कोई गुल संभाल ले लजाम को

मैं जा रहा हूँ बज़्मे बेख़ुदाने बेख़बर में अब
निकाल आऊं ज़हन से हर एक फ़िक्रे ख़ाम को

तू क़ासिद सुबुक खॉ बहरे मौत पेश कर
अमीरे बहर[3] पर हमारी मदहतो[4] सलाम को

यह नक़श तह ब तह अदम किया है ख़त्म जाम पर
के देखे पीरे देर[5] मेरे हुस्ने इख़्तिताम को

---

1. सुखदायी अंत 2. पद 3. समुद्र 4. प्रंशसा 5. पूज्य स्थल

मस्लक–ए–नेस्ती

रखता है फ़क़त इश्क़ तेरा, मेरा दिल
है इश्क़ से मख़्लूत[1] मेरा आबो गिल

''अस्फ़ार''–ओ–''शिफ़ा'' से न हुई मुझको शिफ़ा
इन बहसों ने कुछ हल न की मेरी मुश्किल

ऐ शेख़! मेरी राह को बातिल[2] समझा
हक़ पर तेरे ख़न्दाँ[3] है हमारा बातिल

कुछ मंजिले गर सालिके रह तय कर ले
ख़ुद नेस्ती आजाएगी बनकर मंज़िल

सद क़ाफ़लए दिल गए सूऐ मंज़िल
टहरा रहा एकजा मेरा क़ल्बे ग़ाफ़िल

नूह आ गए मंझधार से साहिल पे अगर
है मेरे लिए ग़र्क़[4] ही होना साहिल

---

1. मिला-जुला 2. झोटा 3. हंसने वाला 4. डूबना

'ख़ानक़ाहे[1] दिल'

उठा पैमाना साक़ी के निकले हस्रते दिल हा
तेरा पैमाना हल करता है सब अस्रारे[2] मुश्किल हा

यह राहे अक़ल, मेय से रोक, सिम्ते ख़ानक़ाहे दिल
के ये दारे जुनूं हरगिज़ नहीं है जाय आक़िल हा

यहां से जा, तू दिल बस्ता अगर है इश्क़े जानां से
के यह मैख़ाना है बस मिल जाओ मा वाए बेदिल हा

तुझे गर मस्तीए मेय इनसे कम्तर है तो जा फ़ोरन
निकल सरहद से, यह ख़ित्ता है ख़ल्वत[3] गाहे आक़िल हा

नज़र क्या रंगे बुत गुलहाए यार में आया
के बाग़े दोस्त से निकला सूए दरयाओ साहिल हा

नज़र आई है राहे जन्नतो फ़िर्दोस क्या तुझ को
जुदा हो कर रहे हक़ से, हुआ मशगूल बातिल हा

हुआ तू आलमे हस्तीओ बालातर को दिल देकर
ब तारे अनकबूती[4] बस्ता तौक़ो सलासिल हा

---

1. दरगाह 2. राज़ 3. अकेले रहने की जगह 4. मकड़ी का जाला

''आफ़ताब नीमए शब''[1]

ऐ सरापा लुत्फ़! ऐ पर्दा नशीनो बे हिजाब
लाखों जलवे हैं तेरे फिर भी तेरे रुख़ पर नक़ाब

आफ़ताब नीमह शब, ऐ महे निस्फ़ुन्नहार[2]
अख़तर दूर अज़ नज़र, बाला ज़माहो आफ़ताब

मेहर साया है तेरा, कीहां तलायादार है
गेसूए हूरे ख़ाबां है तेरे ख़ोमे की तनाब

तेरी हसरत में हैं सोज़ां जान हाए कुदसियां
हूर यां ख़ुल्द के दिल तेरी फ़ुर्क़त में कबाब

तू जलालत[3] का फ़साना, तू नमूना हुस्न का
तू है बहरे बेकरां और आलमे इम्कां सराब

क्या यह मुम्किन है के डाले एक निगाहे नीम वा
ता सफ़र आसान हो मेरा सूए दारुल्हिसाब

हुस्न दिलआरा है तेरा हुस्न बख़्श रूए हुस्न
और तेरा ग़म्ज़ा है इज़राईल हर शीबो शबाब

कर दिया मुझको ख़राब ईमाऐ चश्मे दोस्त ने
दो जहां की सारी आबादी फ़िदाएईं ख़राब

---

1. आधी रात का सूरज 2. आधी दिन का चांद 3. शान

''मक्तबे इश्क़''

आतिश जां को जो दामन की हवा दे, वुह हबीब[1]
दर्दे दिल को जो बढ़ा दे, है वुही मेरा तबीब[2]

दस्ते दिलबर में जो साग़र है वुह है रूह अफ़ज़ा
न मुदर्रिस, न मुरब्बी, न हकीम और न ख़तीब[3]
ख़ाम गेसू में तेरे, राज़े ग़मो इश्क़ हैं सब
सूफ़या इस्से न वाक़िफ़ हैं, न अस्हाबे सलीब[4]

नूर ''मिस्बाह''[5] नै बख़्शाना ''फ़ुतूहात'' नै फ़त्ह[6]
मेरा मतलब है पसे पर्दा मलबूस हबीब

मकतबे इश्क़ के वारस्ता हैं ख़ुद दर पैय ग़म
इनसे चाहे कोई दर्मा[7]तो है बेचारा ग़रीब
जाम से अपने दे एक जुरअए[8] मेय, होश उड़ा
किसी बाहोश को लज़्ज़त नहीं इस मेय की नसीब

निगहे यार की वुह मोज, वुह होल यमे इश्क़
है कभी ओजे फ़राज़[9] और कभी गहरा नशीब[10]

---

1. मित्र 2. हकीम 3. वक्ता 4. सूली 5. चिराग़
6. जीत 7. इलाज 8. घूंट 9. ऊंचाई 10. ढलान

''आशिक़े सोख़तह''

बस पर्दा उठा, रुख़ तो दिखा, नाज़ यह बस है
आशिक़ को तेरे रूए दिल आरा की हवस है

छोड़ूंगा न मैं हाथ से दामन तेरा जब तक
मुझ शेफ़ता में कोई रमक़[1], कोई नफ़स[2] है

ज़ेबाइय ख़ूबां तेरी ज़ेबाई के आगे
दरयाए ग़ज़ब्नाक पे बहता हुआ ख़स है

बुलबुल के हैं लब बंद के हर सिम्त चमन में
या गुलगुलाए ज़ाग़[3] है या शोरे मगस[4] है

दादे ग़मे दिल, तू ही बता, किस्से मैं चाहूं
क्या तू भी सुने? कब मेरी फ़र्याद में रस है

आफ़ाक़ में जो है वुह र–वॉ है सूए दिलदार
ग़ोग़ा[5] यह इसी क़ाफ़िले की बांगे जरस[6] है।

---

1. चमक 2. सांस 3. कव्वा 4. परवाना 5. शोर
6. घण्टी की आवाज़

''सुबूए दोस्त''

आख़िर है उम्र, देख सके हम न कूऐ दौस्त
मजलिस है ख़त्म और नज़र आया न रुऐ दौस्त[1]

महका हुआ है सारा चमन बूए यार से
हो आए हर जगह न मिली हमको बूऐ दौस्त

रोशन है रूए यार से हर गोशऐ जहां
ख़फ़ाश थे, मिली न हमें राह सूए दौस्त

रिन्दाने शेफ़ता ने तो साग़र उठा लिए
हम को मिला न क़त्रऐ–दर्द सुबूऐ दौस्त

हम और तुम न वस्फ़े रुख़े यार सुन सके
वर्ना जहां में क्या है बजुज़ गुफ़तुगूए दौस्त

ज़ाहिर है रूऐ यार, कहो एहले होश से
काफ़ी है काविश तलबो जुस्तुजूऐ दौस्त

साक़ी ने दस्ते यार से बादह हमें दिया
ले तू भी, हाथ उठा सूए दस्त निकोऐ दौस्त

---

1. दोस्त का चेहरा

''महेफ़िले दिलसोख़्तगां''

इश्क़ का और बुजुज़ वस्ल के दर्मां क्या है?
है जो इस आग से महफ़ूज़ तो फिर जां क्या है?

बज़्मे दिलसोख़्तगां में है, बस एक ज़िक्र तेरा
क्या तू इस ज़िक्र का आग़ाज़ है? पायां क्या है?

राज़े दिल किसको, ब जुज़ दोस्तए सुनाया जाऐ
और ख़ुद दौस्त के हाज़िर है न पिन्हां, क्या है?

बस में अन्देशा ओ दीदार नहीं है जिस्के
इसकी नज़रों में ब जुज़ जल्वऐ जानां क्या है

हम ग़रीबों की तरफ़ भी तो हो एक ग़म्ज़ऐ नाज़
नाज़ कर नाज़, के सहरा मैरा सामां क्या है?

ख़ुम उठा, जाम उठा, मेय दे, के एक तेरे सिवा
और कुछ भी सरे पैमाना–ओ–पैमां क्या ह

बन्द लब होंगे न कम होगी परीशां गोई
मेरे सीने में ब जुज़ क़ल्ब परेशां क्या है?

फाड़ दफ़्तर को, क़लम तोड़ दे और रोक ले सांस
वह जो उसका नहीं सरगश्तओ हैरां, क्या है?

''मस्ती–ए–आशिक़''

तेरा दर्दे इश्क़ जिस दिल में नहीं वुह दिल नहीं
जो नहीं रुख़ का तेरे दीवाना वुह आक़िल नहीं

मस्तीए आशिक़ तेरे साग़र की ममनूने करम
ज़िन्दगी का, हो न यह मस्ती, तो कुछ हासिल नहीं

लेके आया तेरा इश्क़े–रुख़ मुझे इस दश्त में
क्या किया जाए? कोई इस दश्त का साहिल नही

अपनी हस्ती से गुज़र, गर आशिक़े सादिक़ है तो
तेरे उसके बीच ''तू'' है, दूसरा हाइल नही

ख़िर्क़ओ सज्जादा क्या, गर तू है रहरो इश्क़ का
दूसरा, जुज़ इश्क़, कोई रह–खे मंज़िल नही

दिल है सीने में, तो फिर सूफ़ी को और ज़ाहिद को छोड़
अहले दिल की है यह महफ़िल, ग़ेर की महफ़िल नही

तुर्रए गैसू से अंगुश्ते शहादत मस करूं
और कुछ तो हासिल मजनूए लायाक़िल नही

मेरे साथ आ, छोड़ यह ख़िर्क़ा के है यह पुर फ़रेब
यह वुह ख़िर्क़ा है के जुज़ मंज़िल गहे जाहिल नही

इल्मो इरफ़ां को मेय–ओ–मेख़ाना से निस्बत है क्या
मंज़िले दिल तक रसाई रहे बातिल नहीं

''ख़िर्क़ए तज़वीर''

हम हैं और ख़िर्क़ए तज़वीर है और कुछ भी नहीं
दो रुख़ी पांव की ज़ंजीर है और कुछ भी नही

खुद पसंदो ओ ख़ुद अन्देशी ओ ख़ुदबीनी से
जां ही क्या रूह ज़मींगीर और कुछ भी नही

आह क्या लेके गए बारगहे दोस्त में हम
सर बसर ना–मऐ तक़सीर है और कुछ भी नही

रुख़ ज़माने से फिराया, किया मैख़ाना पसंद
दिल मेरा बस्ता बतक़दीर है और कुछ भी नही

पेश दर्वेश नहीं गर सिफ़ते दर्वेशी
वह है और ख़ल्क़ की तहक़ीर है और कुछ भी नही

बेसफ़ा गर कोई सूफ़ी हो तो इसका क़िब्ला
दर मर्द ज़रो शम्शीर है और कुछ भी नही

आलिम इख़्लास न रखता हो तो फिर इल्म उसका
''पर्दा बर अक़ल'' की तफ़सीर है और कुछ भी नही

बस किताबें ही जो इर्फ़ान की पढ़ले आरिफ़
क़ैदी लफ़ज़ो तआबीर है और कुछ भी नहीं

ग़म–ए–यार

बादऐ पैमाना दिल्बर में हुशयारी नहीं
बेखुदी ऐसी है जिसके बाद बेदारी नहीं

है हर एक, बीमार तेरी नर्गिसे बीमार का
आशिक़े बीमार को और कुछ बीमारी नहीं

हट गया आशिक़ का दिल हर शै से दिलबर के सिवा
चुप है, अब कुछ याद इसे जुज़ इश्क़े गुफ़तारी नहीं

दर्दे इश्क़े यार की शीरीनी अब किस्से कहें?
जुज़ ग़मे दिलबर किसी को फ़िक्रे ग़मख़ारी नहीं

आ कभी बालीं[1] पे और बीमारे रुख़ को देख ले
और को जुज़ इश्क़ कुछ फ़िक्रे प्रस्तारी[2] नहीं

नाज़ कम कर महर्बां हो जा, हिजाबे[3] रुख़ उठा
दिल को दिलबर से ग़रज़ जुज़ पर्दा बर्दारी नहीं

---

1. छत 2. पूजा 3. पर्दा

''सफ़रे इश्क़''

शोक़ से सूए दिलबर सफ़र चाहिए
बुतकदे में ही सर से गुज़र चाहिए

पीर कहता है, है मैकदे में शिफ़ा
अजनबी महफ़िलों से हज़र चाहिए

जलवए रुख़ तेरा चांद से कम नहीं
यानि एजाज़े शक़्कुल क़मर चाहिए

बहरे उश्शाक़ वा है दरे मैकदा
अब तो उम्मीदे फ़हो ज़फ़र चाहिए

दिल को मस्ती में गर दावऐ हुकम है
फिर तो एहसासे ख़ोफ़ो ख़तर चाहिए

मुज़दा ऐ दोस्त! रिंदी ने खोला है ख़ुम
लब हों इस ख़ाने–नेमत से तर, चाहिए

सर भी जाए तो आतिशकदा ढूंड लो
हो जफ़ा भी तो सीनासपर चाहिए

ख़ुम सलामत के दीदारे दिलदार से
रिंदे आशिक़ भी हो बाख़बर चाहिए

जल्वऐ यार हर कूचा ओ दर में है
सूए हर कूचाओ दर सफ़र चाहिए

''इश्क़े दिलदार''

चश्मे बीमार ने तेरी मुझे बीमार किया
हल्क़ऐ जुल्फ़ ने ऐ यार! गिरिफ़्तार किया

उस गुले गुलशने ज़ेबाई ने बेग़म्ज़–ऐ–नाज़
सारे ख़ूबाने जहां से मुझे बेज़ार किया

हाथ से होश दिए बैठे हैं सारे मैख़्ार
जामे मेय बख़्श के तूने मुझे हुश्यार किया

क्या करूं, सोख़्ता ग़म हूँ के अश्वओं ने तरे
मुझ को दिलबाख़्ता लाले गुहुरबार किया

इश्क़े दिलदार ने शायद मुझे समझा मंसूर
घर में रहने न दिया, दर पे सरेदार किया

हल्क़ए सूफ़ीओ मक्तब से निकाला मुझको
इश्क़ ने हल्क़ा बगोश दरे ख़ुम्मार किया

बा दऐ साग़रे लब्रेज़ ने जावेद किया
बो सऐ दर ने मुझे महरमे असरार किया

दिलजूई–ए–पीर

हाथ चूमो शेख़ के, उसने मुझे काफ़र कहा
मोहतसिब को दो दुआ जिसने रसन बस्ता किया

हों दरे पीरे मुग़ा पर मोतकिफ़, जिसने मुझे
दे के एक साग़र दो आलम से मेरा दिल भर दिया

आबे कोसर पी के मैं एहसान रिज़वां का न लूं
तेरे अकसे रुख़ ने मुझको हाकिमे दोरां किया

पर्दए सिर्रे अज़ल उठा है उसके हाथ से
मेरी क़िस्मत से मुझे दर्वेश ने वाक़िफ़ किया

पीरे मैख़ाना ने अपने नाख़ुने तदबीर से
कर लिया मुझ को मुसख़्ख़र, कर दिया मुझको फ़ना

पीरे मैख़ाना ने की इस दर्जा दिलजूई मेरी
मुझको यकसर ख़ुद मेरी हस्ती से ग़ाफ़िल कर दिया

''बहार''

फ़स्ले गुल आई, ग़मे दिल और अफ़ज़ूं हो गया
दर्दे जां अफ़ज़ूं हुआ, और दिल मेरा ख़ूं हो गया

कार्वाने आशिक़ां तो जानिबे मंज़िल गया
हाले दिल मेरा, समझ लो क्या हुआ, क्यूं हो गया

हिजरे गुल बुलबुल को है और हिजरे बुलबुल गुल को है
इश्क़ का अपने, हर एक, गुलशन में मफ़तूं हो गया

रूए गुल से सबा ने पर्दा सरकाया ही था
मैं ही क्या? जिसने नज़र डाली वह मजनूं हो गया

चश्मे गर्मे महर से सब ज़र्दी ओ सर्दी गई
गुलिस्तां सर सब्ज़, बुस्तां गर्मो गुलगूं हो गया

मौसमे गुल आ गया, आई बहार गुलगि़दार
सब ख़ुमार, ऐ मैंकशाने इश्क़! बेरूं हो गया

''ख़िज़्रे राह''

यह क्या? के मैकदा तेरी गुज़ार गाह हुआ
हमारा नालए दिल तो न ख़िज़्रे राह हुआ

बिसातगाह तेरी और ख़ाराब–ए–दर्वेश
ख़ुदा न ख़ास्ता क्या तुझको इश्तिबाह हुआ

सफ़ा वुह दिल को अता की है तेरी आमद ने
हसीरे[1] फ़क़्र तेरे दम से काख़ेशाह[2] हुआ

थी दूद[3] आह से जिस रात सख़्त तारीकी
सफ़ीरे नूरे सहर तेरा रूए माह हुआ

कहो यह शेख़ से, इस रात वादए जन्नत
मेरे नसीब में, तो चाह या न चाह हुआ

तू शाहे बज़्मे जमाल और ''हिन्दी'' बेदिल
वुह जो भी कुछ है, तेरा ख़ाके बारगाह हुआ

---

1. फ़क़ी का घर 2. शाह का महल 3. धुआँ

''दावा–ए–इख़्लास''

तू आदमज़ादा है, क्यूं भूल बैठा ''इल्मुलअस्मा''
कहां है ''क़ाबे क़ौसेन'' और किधर है तेरा ''ओ अदना''

यह फ़र्यादे 'अनल हक़'' बर फ़राजे[1] दार क्या माने?
अगर तू हक़ तलब है, क्या हुई अन्नियतो अना''

अलग कर दे यह ख़िर्क़ा, है अगर तू सूफ़ी साफ़ी
गई तेरी किधर वुह दमज़नी बाबूक़ो बाक़रना

क़ल्न्दर! जुहद मत बेच, आबरू[2] अपनी न ज़ाया कर
तू ज़ाहिद है तो बतला, क्या हुआ ''इक़बाले बर दुनियां''

हमारी बन्दगी ख़ूब अगर सोदागरी ठहरे
तो क्या दावऐ इख़्लास, ब–ई ख़ुद परस्ती हा

यह धंधा छोड़ दे ज़ाहिद, न दे अपनी तरफ़ दावत
सुना है मैं ने तेरा ''ला इलाह'' क्या हुआ ''इल्ला''?

अदीबे कम नज़र! बस तोड़ दे यह कलके आलूदा
दिलाज़ारी ज़रा कम कर, ख़ुदा से क्यूं है बे परवा

---

1. फांसी का तख़्ता 2. इज़्ज़त

''कारवान–ए–उम्र''

उम्र आख़िर है मगर आया मेरा दिलबर नहीं
ख़त्म होती है कहानी ये ग़म मगर आख़िर नहीं

जामे मर्ग आया मगर मैंने न देखा जामे मेय
साल गुज़रे और लुत्फ़े ग़मज़ऐ दिलबर नहीं

इस क़फ़स[1] में आके मुर्ग़े–जॉ[2] हुआ बेपर मगर
तोड़ दे जो यह क़फ़स, ऐसा कोई सफ़दर नहीं

आशिक़ाने रूए जानॉ सब हैं बेनामो निशॉ
नामदाराने जहॉ को यह हवाए सुर नहीं

मुन्तज़िर हैं सफ़ बसफ़[3] सब कारवाने अहले इश्क़
किस को समझाएं के माशूक़ जॉ–पर्वर नहीं

रूह दे मुर्दों को वुह और आशिकों की जान ले
जाहिलों को इस तरह आशिक़ कशी बावर नहीं

---

1. पिंजरा 2. पक्षी 3. लाइन में खड़े

''लज़्ज़त–ए–इश्क़''

लज़्ज़ते इश्क़ है क्या, आशिक़ मेहजूं जाने
रॅंजे लज़्ज़ते दहे हिजरॉ को तो मजनूं जाने

केसे, बे कोहकनी[1], समझेगा शीरीनीए हिर्ज[2]
ज़ादऐ नाज़ न राहे दिले पुर ख़ूं जाने

रंगे शीरीनीये शीरीं में है, बू भी ख़ुसरो
तू जो फ़र्हाद का हाल दिले गुलगूं जाने

दिले यूसुफ़ हो जो ज़िन्दाने जुलेख़ा में असीर
दस्तरस से महो ख़ुर्शीद को बैरूं जाने

ग़र्के दरिया को बजुज़ मौज नज़र क्या आए
आशिक़े ग़मज़दा क्या साहिलो हामूं जाने

जल्वऐ यार का आग़ाज़ न अन्जाम कोई
इश्क़े बेताब तो 'कब' जाने है या 'क्यूँ' जाने

---

1. पहाड़ खोदना 2. जुदाई की मिठास

''पर्दा नशीं''

यह क़ाफ़ले, अज़ल से जो ता अबद र–वॉ हैं
तेरी तरफ़ रवॉ थे, तेरी तरफ़ दवां हैं

है तेरे इश्क़ में सब गश्ता और हैरॉ
यह दिल जले, जहां हैं, बैताबो बेतवां हैं

पर्दा ज़रा उठा दे, चेहरा ज़रा दिखा दे
खुल जाएं हर नज़र पर असरार[1] जो निहां[2] हैं।

ऐ पर्दादार! शोक़े दीदारे रुख़ में तेरे
दिल बाख़्ता हैं जानें, दिल हैं के बेअमां हैं

है रिन्द मैकदे में सरमस्ते याद तेरे
और बुतकदे में हैरां सब पीर और जवां हैं

ऐ दोस्त, मेरे दिल को अपना हदफ़[3] बना ले
मिज़्गां[4] हैं तेरे नाविक, अब्रो[5] तेरे कमां हैं

---

1. राज़ 2. छिपे हुए 3. निशना 4. पलकें 5. भवें

''मस्ती नेस्ती''

महज़रे शेख़ में कुछ तज़्केराए यार नहीं
ख़ानक़ाहों में भी इसके कहीं आसार नहीं

मस्जिदो दैरो कलीसा ओ कनीसा देखा
किसी गोशे में वहां ख़ानाऐ दिलदार नहीं

साग़रे मैय है जो राज़े निहां, अहले ख़िरद!
क्या कहें तुमसे, हमें जुर्अते इज़्हार नहीं

जो ग़मे इश्क़ निहां सीनऐ मैख़ार में है
पेशे अर्बाबे ख़िारद लाइक़े इज़्हार नहीं

अपने राही के लिए रम्ज़[1] है एक, इश्क़ की राह
आशना इससे जहां में कोई हुश्यार नहीं

नेस्ती की है, मेरी जॉ में जो मस्ती, इससे
दाद गाहों को कहीं जुर्अते इन्कार नहीं

राहे मस्तां पे चल और होश में आना न कभी
न सफ़े होश वरां लायक़े दीदार नहीं

---

1. इशारा

''रोज़े वस्ल''

ग़म न कर, दिन आए, दिल से दर्दे हिजरां जाएगा
जल्द ही से सरे ख़ुमार, ऐ मेय–गुसारां जाएगा

पर्दादार अब रुख़ से अपने पर्दा सरकाने को है
सामने आएगा वुह, दर्दे दिलो–जॉ जाएगा

“kk[Hkj S[1] गुल पे बुलबुल नग़मा ख़ां होने को है
ज़ाग़[2] नादिम हो के बैरूने गुलिस्तां[3] जाएगा

नूर अफ़शां बज़्म उसके नूर से हो जाएगी
यादे रिन्दां से ख़्याले ग़ेर, जानॉ जाएगा

महे रुख़ चमकेगा उसका, अब्रे ग़म हट जाऐंगे
पर्दऐ रुख़सारह सर्वो–ख़िरामां जाएगा

मुज़्दाबाद[5] ऐ दोस्तो! नज़दीक है दीदारे दोस्त
रोज़े वस्ल आएगा, दर्दे शामे हिज्रां[6] जाएगा

---

1. फूल की टहनी 2. कव्वा 3. बाग़ से बाहर 4. रोशनी फैलना
5. मुबारकबाद 6. जुदाई

''आतिशे इश्क़''[1]

किसका दिल शेफ़्ता जुल्फ़े चलीपा न हुआ
किसने देखा तेरा रुख़ और तराशीदा न हुआ

नाज़ कर नाज़ के हर दिल तेरा ज़िन्दानी[2] है
ग़म्ज़ा[3] कर ग़म्ज़ा के दिलबर कोई तुझ सा न हुआ

तोड़ दे जलवों से ख़ूबां ज़माने का ग़ुरूर
रुख़ दिखा, कहना, है फिर कोन जो रुस्वा[4] न हुआ

आतिशे ग़म को हवा दे, गमे दिल अफ़ज़ूं कर
दिल को राहत न मिलेगी जो ग़म अफ़ज़ा न हुआ

दिल में वुह आग लगा दे के मिले दिल को क़रार
यूं तो कब इश्क़ की इस आग में जलना न हुआ

कौन ज़र्रा न बना फ़े ज़ से तेरे सहरा
कौन क़त्रए–निग्हे–लुत्फ़ से दरिया न हुआ

जॉ तेरे कूचे में ए दोस्त हुई सरे बरख़ाक
दिल वुह क्या जो फ़िदाऐ रुख़े ज़ेबा न हुआ

---

1. इश्क़ की आग 2. क़ैदी 3. इतराना 4. बदनाम

''बहारे आरज़ू''

दर पे साक़ी के अगर नाला कनॉ[1] हो जाएगा
देखना यह पीरे फ़र्सूदा[2] ज्वां हो जाएगा

गुंचओ गुल मुस्कुराएंगे, बहार आ जाएगी
उम्रे कोतह[3] का तसव्वुर दास्तॉ हो जाएगा

कुंजे मजलिस में जो अफ़सुर्दा[4] है एक मुर्ग़े असीर[5]
यह फ़राज़ आस्मॉ में पुर–निशां हो जाएगा

रख न पाएगी क़दम गुलज़ार में बादे सुमूम
फ़ेज़े अब्रे नो बहारी जब अयॉ[6] हो जाएगा

क़ौस को पीछे धकेलेगी अगर बादे बहार
अब्रूऐ क़ौसे क़ज़ह[7] बढ़कर कमॉ हो जाएगा

एक दिन बेपर्दा आ निकलेगा यारे पर्दादार
नूर रुख़ इसका जमाले दो जहॉ हो जाएगा

---

1. मांगने के लिए आवाज़ देना 2. बुज़ुर्ग 3. कम आयु
4. उदास 5. क़ैदी 6. प्रकट होना 7. रेनबो

''बादऐ होशियारी''

ले जाम, और यह जामऐ[1]—जुहदो रिया[2] उतार
महराब कर दे शेख़ रियाई को वा—गुज़ार

जा पीरे मैकदा को सुना दे हमारा हाल
एक जाम दे के दूर करे सर से यह ख़ुमार

कशकोले फ़क़्र हम को सरे—इफ़तिख़ार[3] है
ऐ यारे दिल फ़रेब! बढ़ा और इफ़तिख़ार

हम—रेज़ा ख़ाह सुहबते रिन्दे फ़क़ीर हैं
एक ग़म्ज़े से नवाज़ दिले पीर जीरा ख़ार

ज़िक्रे रक़ीब रह रहे, यह ज़िक्र बन्द कर
यह ज़हर क्यूं न हो के है यह सांप गन्डेदार

बोसो[4] किनारे यार ने बख़्शी मुझे हयात[5]
अब हिज्र में नसीब नहीं बोसओ—किनार

दे दो यह पीरे मैकदा को इन्तिबाहे[6] ग़म
साक़ी ने जाम दे के किया मुझको हौशियार

---

1. लिबास 2. दिखावा 3. इज़्ज़त 4. प्यार मोहब्बत
5. जीवन 6. चेतावनी

''परतवे ख़ुर्शीद''[1]

चमन में क़ाफ़लाए–नौ बहार फिर आया
ज़मान बमस्तीओ बोसो किनार फिर आया

तमाम हो गई अफ़सुरदिगी ओ ग़मगीनी
ज़माने चस्पे–बदामाने यार फिर आया

वुह मुर्दनी वुह परीशां दिली हुई आख़िर
प्यामे ज़ीस्त ब नक़शो निगार फिर आया

गई वुह ज़र्दीऐ रूऐ चमन कि शाख़ों पर
निगाहे महर हुई, बर्गोबार फिर आया

मुग़नी ओ ख़ुमो साक़ीओ मैकदा के साथ
जूनूं, ब शोक़े ख़मे जुल्फ़े यार फिर आया

जो मदरेसे से गुज़रना तो शेख़ से कहना
तुझे पढ़ाने वुह लालह इज़ार फिर आया

दुकाने जुहद करो बन्द, मौसमे गुल है
के गोशे–दिल में कोई नग़मा बार फिर आया

---

1. सूर्य का अक्स

''उरूसे सुब्ह''[1]

यह शब जो मेरी बाहों में है सूरते उरूस
रखना न ऐसे वक़्त दरेग़[2] अज़ किनारो बोस

ऐ शब! उरूसे सुब्ह को बाहों में भींच ले
इमशब के तंग बाहों में ख़ुफ़्ता है यह उरूस

हरगिज़ न अपने लब, लबे शीरीं से मैं हटाऊँ
आने दो बांगे सुब्ह को, आए सदाए कोस

ख़ुर्शीद आ न जाए राहे–सुब्ह बन्द कर
होगी न आज अज़ान, उड़ा दो सरे ख़ुरूस

इमशब के मेरे हाल पे वुह महर्बान है
महरूमियों का अपनी नहीं मुझको कुछ फ़सोस

इस शब की सुब्ह चाहूं तो कहना न मैगुसार
होगा, है मेरा तख़्ते सुलेमॉ पे गर जुलूस

'हिन्दी' के तेरे कूचे में आया है हिन्द से
है हेच[3] उसको शाहीऐ शीराज़ो मुल्के तूस

---

1. सुबह की दुल्हन 2. रुकावट 3. तुच्छ

''फ़स्ले तरब''[1]

हाथ लहराता सूऐ कूऐ निगार आया हूँ
पेर उठाता हुआ बर नग़मऐ तार आया हूँ

हासिले उम्र तेरी नीम निगाही है अगर
बहर–ऑ नीम निगह, ब–दिले ज़ार आया हूँ

जां फ़िज़ा मोसमे गुल में है तेरे हाथ का जाम
सुन के मैं भी ख़बरे जश्ने बहार आया हूँ

मुतरिबे इश्क़ को बुलवाओ, सुनें नग़मए इश्क़
आज इसी के लिए मैं बादा गुसार आया हूँ

मक़तले इश्क़ से होता हुआ मैख़ानें तक
बहरे दीदारे रुख़े लाला इज़ार[2] आया हूँ

जामऐ जुहद किया चाक बला से छूटा
और छूटा तो पऐ दीदने[3] यार आया हूँ

देखने के लिए, ऐ दोस्त! तेरे रुख़ की सफ़ा
ब ''सफ़ा'' पुश्त, सूऐ निगार आया हूँ

---

1. ख़ुशी का मौसम 2. महबूब 3. देखने

''चश्मे बीमार''

ख़ाले लब का तेरे ऐ दोस्त गिरिफ़्तार हूँ मैं
चश्मे बीमार को देखा है तो बीमार हूँ मैं

कोस ''अनल हक़''[1] का बजाया है के मिस्ले मंसूर
इतना बेख़ुद हूँ ख़रीदार सरे दार हूँ मैं

ग़मे दिलदार ने भर दी वुह मेरी रूह में आग
जॉ से बेज़ार हूँ और शुहरऐ बाज़ार हूँ मैं

वा[2] रहे मेरे लिए मैकदा[3] का दर शबोरोज़[4]
मस्जिदो मद–रिसा दोनों ही से बेज़ार हूँ मैं

जामऐ जुहदो रिया फेंक दिया और पहना
ख़िर्का पीरे ख़राबात तो हुशयार हूँ मैं

वाइज़े शहर की बातों ने सताया जो मुझे
रिन्दे मैख़ार का अब हम दमो हमकार हूँ मैं

यादे बुतख़ाना करूं अब, कि बुते मैकदा ने
ख़्वाब से मुझको जगाया है तो बेदार[5] हूँ मैं

---

1. मै ही सत्य हूँ 2. खुला 3. शराबख़ाना 4. रात-दिन
5. जागा हुआ

''आर्ज़ूऐं''

मैंने सोचा था के हो जाऊं मैं आदम, न हुआ
रहूं मैं बेख़ाबरे हाले दो आलम, न हुआ

ख़म[1] करूं सर को दरे पीरे ख़राबात पे मैं
ताकि हो जाऊॅ मैं इस हल्क़े का महरम, न हुआ

घर यह महबूब को दूं ''ख़ुद'' से मैं हिजरत[2] कर जाऊॅ
ताकि अस्मा का हो जाऊॅ, हो जाऊॅ मुअल्लिम, न हुआ

दोस्त के हाथ से शब भर मैं पिऊॅ बादऐ इश्क़[3]
दिल में लाऊॅ न ग़मे कोसरो ज़म्ज़म, न हुआ

बेख़ाबर ख़ुद से रहूॅ, वा लहे रुख़्सारे हबीब
इस तरह हो के रहूं रूहे मुजस्सम, न हुआ

सरओ पा गोश[4] रहूॅ और सर ओ पा होश रहूॅ
के रहूं तेरे दमे गर्म से मल्हम, न हुआ

राह एक सूए, फ़ना मुझको सफ़ा से मिल जाए
ताकि कह–लाऊॅ वफ़ा दारे मुसल्लम, न हुआ

काबऐ दिल से हर एक बुत को निकालूॅ बाहर
ता रहूॅ दोस्त की नज़रों में मुकर्रम न हुआ

दफ़न सब आर्ज़ूऍ हो गईं ऐ नफ़्से ख़बीस
मैंने चाहा था कि हो जाऊॅ मैं आदम, न हुआ

---

1. झुकाना 2. दूसरे स्थान पर चला जाना 3. इशक़ की शराब
4. ध्यान मग्न

''जामह दरॉ''

दिल में हसरत है के पेमाना तेरे हाथ से लूँ
कहॉ ले जाऊँ यह ग़म, किस्से मैं यह राज़ कहूँ

जान पर, आर्ज़ूऐ–दीद में खेला हूं मैं
आज़रे–अस्पन्द हूँ, पर्वाना शमाए–रुख़ हूँ

उसकी फुर्क़त[1] में हूँ इस कुंजे क़फ़स[2] में बे जॉ
ले जा यह दाम[3] के आज़ाद मैं पर्वाज़ करूँ

ख़ब्स आलूदा यह ख़िर्क़ा, यह मुसल्लाऐ रिया
दरे मेख़ाने पे, मौक़ा हो तो पुर्ज़े कर दूँ

साग़रे इश्क़ से दे यार एक जुर्आ[4] मैय
जान मस्ती में अलग ख़िर्क़ऐ हस्ती से करूँ

एक ग़म्ज़ा[5] तू दिखाऐ तो पलट आए शबाब[6]
तू जो चाहे तो मैं आफ़ाक़ से हद से गुज़रूँ

---

1. जुदाई 2. पिंजरा 3. जाल 4. घूंट 5. नज़ारा 6. जवानी

''इन्तिज़ार''

मैकदे में, मैं करूँ क्या जो न फ़र्याद करूँ
हिज्रे रुख़ में तेरे किस्से तलबे दाद करूँ

अपनी महफ़िल में तो रिन्दी नहीं दादो बेदाद
किस्से लूं दाद, कहाँ शिक्वऐ बेदाद करूँ

ग़म, ख़ुशी, जोरो जफ़ा जिसने अता की मुझको
बा सफ़ा इसका अदा शुक्रिया–ए–दाद करूँ

तेरा आशिक़ हूँ, तेरा आशिक़े रुख़ हूँ तो न क्यूँ
वस्लो हिज्राँ का तहम्मुल ब–दिले–शाद करूँ

जोर मजनूँ गुले वहशी! तेरे ग़म में सह लूँ
मेरे ख़ुस्रो! मैं सहन तेशाऐ फ़र्हाद करूँ

तू मेरे साथ है और मरता हूँ मैं तेरे बग़ैर
राज़े नो है यह, इसे हदयऐ उस्ताद करूँ

हादसे आते हैं और साल गुज़र जाते हैं
इन्तिज़ार फ़ुर्ज अज़ नीमाऐ ख़रदाद करूँ

''शम–ऐ–वुजूद''

वुह दिन भी आएगा के हम इस घर से जाऐंगे
शाख़ो अदम पे अपना नशेमन बनाऍंगे
शम–ए–वुजूदे यार से दिल को लगाऍंगे
मुॅह फेर लेंगे ख़ानक़हो सऊमा से हम
साक़ी के दर पे सर पऐ सिज्दा झुकाऐंगे
सूफ़ी के वाज़ से न हमें हाल आ सका
अब रुख़ को सूऐ कूऐ सनम मोड़ जाऐंगे
गेसू यह तेरे दाम हैं, दाना है ख़ाले लब
आज़ाद दामो दाना से ख़ुद को बनाऐंगे

कब जाऐंगे न जाने अब इस बुत्कदे से हम
बेगाना घर से पुश्त कब अपनी फिराऐं गे

''हिम्मते पीर''

उक़्दा[1] है दिल में, उक़्दा कुशा[2] चाहता हूँ मैं
रखता हूँ दर्दे रूह, दवा चाहता हूँ मैं

देखा है तूर[3] को न तमन्नाऐ दीद है
हां तूरे–दिल में एक ख़ते पा[4] चाहता हूँ मै

मैं सूफ़ी सफ़ीय्य रहे–इश्क़ तो नहीं
हिम्मत से पीरे राह की, सफ़ा चाहता हूँ मै

दर्वोश से न दोस्त वफ़ा कर सके अगर
फिर बात साफ़ है कि जफ़ा चाहता हूँ मै

ऐ दिलबरे–जमाल! उठा चेहरे से नक़ाब
तारीकयों में राहनुमा चाहता हूँ मै

ऐ सैदे–ज़ात! नर्ग़ऐ–पन्दार से निकल
हो जाना क़ैदे–ख़ुद से रिहा चाहता हूँ मै

तू मेरी रूह में है, पर आता नहीं नज़र
किन्ज़े अयॉ[5] में किन्ज़े ख़िफ़ा[6] चाहता हूँ मैं

eSMwrk gWcUh djks;g fdrkcsb'd+
,d nLrsuk [kqk c [kqk pkgrk gWeS

---

1. बँधन 2. खोलना 3. एक पर्वत का नाम 4. पॉव का निशान
5. सामने 6. छुपा हुआ

''जामे अज़ल''[1]

हम इश्क़ ज़ादओ–मुत्नबाऐ जाम हैं
जॉबाज़ीयो ख़्याले–बुतां में तमाम हैं

fny nkng[2] मैकदे के हैं, जॉबाज़े नोश[3] भी
पीरे मुग़ां[4] के दर के क़दीमी गुलाम हैं

हम ख़ाबे यार हो के तबह हिजरे यार में
ग़र्क़े–विसाल हो के ब–हिजरां मदाम हैं

बे रंगो बे नवा भी हैं, क़ैदीये रंग भी
हम बेनिशां हैं फिर भी तलबगारे नाम हैं

दर्वेश से भी, सूफ़ीयो–आरिफ़ से भी है जंग
पख़्र्राशदार हिक्मतो इल्मे–कलाम हैं

ममनूऐ–मदरिसा भी हैं, मख़्लूक़ से भी दूर
महजूर अहले–होश, तरीदे–अवाम हैं

रोज़े अज़ल से हस्तीओ–हस्ती तलब से दूर
हमगामे–नेसती हैं, फ़ना में तमाम हैं

---

1. अमृत 2. रसिया 3. नशा करने वाले 4. मैकदा का मालिक

''मऐै चारहसाज़''[1]

साक़ी मेरे लिए दरे–मैख़ाना बाज़[2] कर
जुहदो रियाओ–दर्स से अब बे नियाज़ कर

एक तार तेरी जुल्फ़ का काफ़ी है राह में
इस तरह मुझको फ़ारिग़े–दर्सो–नमाज़ कर

कर बेनक़ाब मुझ पे रुख़ो–जुल्फ़े–यार को
और बे नियाज़ काबओ मुल्के हिजाज़ कर

लब्रेज[3] कर के ला मऐै साफ़ी से मेरा जाम
दिल को सफ़ा से सूए बुते–तुर्कताज़ कर

चारह नहीं है मुझ को ग़मे–हिज्रे–दोस्त से
मुझको हलीफ़े जामे मऐै चारह साज़ कर

---

1. बीमारी दूर करने वाली शराब 2. खोल 3. पूरा भरा हुआ

''बादह–ए–हुज़ूर''

उसके दीदार की हस्रत में हूँ , ग़मख़ारी कर
पीरे राह, थाम मेरा हाथ, मददगारी कर

तेरे कूचे से मैं हरगिज़ न फिरूंगा मायूस
ग़मज़दों की, किसी ग़मज़े से मददगारी कर

अपने मैख़ाने से एक जुरआ मैय दे मुझको
होश खो दे मेरे, आमादऐ–हुश्यारी कर

नहीं मुम्किन तो न कर लुत्फ़ न दे मुझको पनाह
इश्वओ–नाज़ से आग़ाज़े–सितमगारी कर

तेरा बीमार, तेरा आशिक़े उफ़तादा हूँ
निगहे है लुत्फ़ से बीमार की ग़मख़ारी कर

तू है सज्जादे पे और जाम मेरे हाथ में है
कुछ तो इस मेय ज़दऐ ज़ार की दिलदारी कर

फेर ली है निगहे लुत्फ तो चल यूं ही सही
तू के क़हहारे–दो आलम है, दिल आज़ारी कर

''बादह–ए–इश्क़''

मैं ख़राबाती[1] हूँ, मुझ से सुख़ने यार न मांग
गुंग हूँ, गुंगे–परागन्दा[2] से गुफ़्तार[3] न मांग

मैं हूँ ज़िन्दानीए–महजूरी–ओ नाबीनाई[4]
ऐसे महजूर से बीनाई–ओ–दीदार न मांग

चश्मे बीमार ने तेरी मुझे बीमार किया
मुझ से शीरीं लबी–ओ–दीदऐ–हुश्यार न मांग

हम नशीं गर है क़ल्न्दर का तो हरगिज़ उस्से
हिक्मतो फ़लसफ़ाओ–आयतो–अख्बार न मांग

मैं तेरे इश्क़ में सर्मस्त हुआ हूँ, मुझ से
पिन्दे मर्दाने–जहां दीदओ–हुश्यार न मांग

---

1. बर्बाद 2. गूंगा 3. बोलना 4. अंधापन

''ख़िल्वते मस्तॉ''[1]

हम ने कुछ हल्क़ऐ दर्वेश में देखी न सफ़ा
सूमआ में गऐ, आई न मगर एक निदा

मदरसे में भी किताबों में न था दोस्त का ज़िक्र
मि–ज़ना पर भी गऐ और न सुनी उसकी सदा

जमा कीं ख़ूब किताबें, न हुआ पर्दा चाक
बज़्में तदरीस में बैठे रहे, रस्ता न मिला

बुत्कदे में भी बुहत उम्र को बर्बाद किया
और महफ़िल में हरीफ़ों[2] की मर्ज़ था न दवा

जाऊॅ अब जर्ग–ए–उश्शाक़ में बल्कि पाऊॅ
बाग़े दिलबर की हवा, और निशाने कफ़े पा[3]

''माओमन'' अक़्ल की ढाली हुई ज़ंजीरें हैं
वर्ना उश्शाक़ की महफ़िल में तो ''मन'' और न ''मा''

---

1. मस्तों की महफ़िल 2. दुशमनों 3. हाथ पांव